RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-01
jan-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

समाजशास्त्रीय द्रष्टि से जन–जीवन का स्वरुप शैलेश मटियानी जी के साहित्य में

[1]Saroj rani & [2]Dr. Navneeta Bhatia

[1]Research scholar Opjs University, Churu (Rajasthan)
[2]Research Guide, Assistant Professor ,Hindi department,Opjs University Churu (Rajasthan)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 28 January 2018

Keywords
जन–जीवन, शैलेश मटियानी, समाजशास्त्रीय द्रष्टि

ABSTRACT

जन का मतलब ''लोक, लोग प्रजा, सर्वसाधारण, जनता, अनुयायी, अनुचर'' अनुयायी, अनुचर'' होता है तथा जीवन का अर्थ ''जीता रहना, ''जीता रहना, जीता रहना, प्राण धारण, जीवित दशा, धारण, जीवित दशा, जिंदगी, प्राणी, जीविका, अत्यधिक प्यार, परमणी, जीविका, अत्यधिक प्यार, परम प्रिय'' आदि अर्थों को समेटा है लेकिन जन–जीवन का मूल अर्थ 'सामान्य जीवन' से है जो समय तथा परिवेश के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। ला`क शब्द की व्यु त्पत्ति, संस्कृत के लोकदर्शने धातु से हुई हैं। जिसका अर्थ 'देखने वाला' तथा रूढ़िगत अर्थ 'सामान्य लोग' है। 'लोक' शब्द अत्यन्त पुराना है जिसका प्रयोग अथर्ववेद में हुआ है। प श्रीपद् दोमोदर सातवलेकर के अनुसार जन का अर्थ– 'प्रजनन करने वाला' जन मे ं इसके अतिरिक्त कोई गुण नहीं होता। 'जन' के लिए 'आत्महनो जनाः' भी कहा गया है 'लोक' केवल देखता है आत्मोद्धार के मार्ग पर उन्नति नहीं करता। मनन करने वाला 'मनुष्य' है ,तो भोगों में रमण करने वाला 'नर' कहलाता है। कहा जाता है कि 'न रमते नरति इति नरः'। नर श्रेणी में। जन्म लेना और मर जाना तथा अपने जैसे और पैदा कर जाना 'जन' है लेकिन लोक संज्ञा का अधिकारी बनने के लिए उसमे ं दर्शन क्षमता होना चाहिए।

प्रस्तावना

जन–साहित्य बनाने के लिए समाज की आत्मा के साथ तादाम्य स्थापित करना पड़ेगा, जन–साहित्य का सम्पर्क सामाजिक हित और कल्याण से है, न कि दल–विशेष से। जनहित, जनवाद व जनपु ंज को भी जान लेना आवश्यक है। जनहित का तात्पर्य सामाजिक कल्याण से है, सारे समाज का जो कल्याण है। वही वस्तुतः समाज मे रहने वाले लोगों का भी कल्याण है। जनवाद एक समूहवाची शब्द है। कला, साहित्य और जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण है जो जन सामान्य को महत्व देता है। प्रगतिवादी साहित्य को जन–साहित्य मान लेना भूल होगी। प्रगतिवाद की एक विशेषता जनवादी दृष्टिकोण है। मार्क्सपोषित जनवादी विचार के अनुसार साहित्य मे ं मानव के सामुहिक भावों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। लेखक की शक्ति जनता से आती है जनता के साथ उसका सम्बन्ध जितना ही घनिष्ठ होता है उसमे ं उतनी ही अधिक रचनाशक्ति आती है। जनवादी कलाकार वर्ण्य विषय की तरह शैली और भाषा को भी जनवादी बनाने का समर्थक है। मार्क्सवादी समीक्षा में तो हर युग के श्रेष्ठकवि और काव्य को जनवादी माना गया है, चाहे वे वाल्मीकि, व्यास और कालिदास हो अथवा कबीर, सूर, तुलसी या मीरा ं हो ं। आधुनिक काल मे जनवादी धारा के प्रारम्भकर्ता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है। प्रसाद, प्रेमचन्द्र, निराला, नागार्जुन, शैलेश, रेणु, आदि जनवादियों मे ं आते है।

जन–जीवन के समस्त दृश्यो का चित्रण व्यापक होना चाहिए। मुक्तिबोध का अभिप्राय हमारे रात–दिन चलते हुए संघर्षों के दृश्यों से है। यही जन–जीवन के प्रतीक है। इस लक्ष्य की पूर्ति अपने आपमें एक ऐसा आकर्षक और सम्मोहक कार्य है, जिसके लिए जिन्दगी के तमाम दूसरें व्यक्तिगत मोहो ं को ठुकराया जा सकता है, और उसके माध्यम द्वारा जीवन की सफलता और अपने साहित्य का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

शैलेश मटियानी की दृष्टि में जन–जीवन

जीवन जीने का अधिकार मनुष्य का महत्वपूर्ण मूल अधिकार होता है। जीवन इच्छा सभी इच्छाओं से बलवती होती है। सारे अधिकारो ं का अस्तित्व जीवन मे ही समाहित होता है। जीवन का अधिकार सभी अधिकारों से ऊपर है। अतः सभी व्यक्तियों का दायित्व होता है कि वह दूसरे व्यक्तियो के इस अधिकार की प्राणप्रण से रक्षा करे ं। अधिकांश देशों ने आत्महत्या को अपराध माना हैं। आत्महत्या के प्रयास से विफल व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है। लेकिन कुछ देशो में धार्मिक आधार पर आत्महत्या को उचित ठहराया गया है जैसे जापान मे हाराकिरी प्रथा एंव भारत मे जैन सम्प्रदाय के संथारा प्रथा।

शैलेश मटियानी के लिए व्यक्ति का जीवन महत्वपूर्ण है। वे जीवन को सामाजिक धरोहर मानते है। लोकहितकारी राज्य का कर्तव्य है कि वह अपने नागरिकों के लिए जीविका उपार्जन की व्यवस्था करें। कड़ाके की ठण्डक से बचने के लिए राज्य रैनबसेरा की व्यवस्था करता है। अपने कुछ मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन हड़ताल होने से जन–जीवन प्रभावित होता है। जन–धन की हानि होती है। ओलावृत्ति, बारिश, सूखा आदि समस्याओं से निजात के लिए सरकारे मध्य मे ं आती है। राहत कार्य कर लोगों के जन–जीवन को सामान्य बनाती है। इसी तरह भुखमरी, गरीबी, बेगारी, भिक्षावृत्ति, बेरोजगारी, आत्महत्या, अपराध, चोरी आदि नकारात्मक मूल्यों को भी कम करती है। अन्धविश्वास, असमानता व अश्पृश्यता जैसे परम्परागत मूल्यो ं से अविश्वास की भावना एवं नये मूल्यों का उदय

RRIJM 2015, All Rights Reserved

होता हैं एक सांस्कृतिक टकराहट की भावना पनपती है और समाज विभाजित होता है यह परिवर्तन निरन्तर चलता रहता है।

साहित्य मे ं मानव समाज के भाव समाहित होते हैं, जो बहुआयामी फलक की अभिव्यक्ति होती है। साहित्यकार त्रिकालदर्शी होता हैं वर्तमान का अंकन, भविष्य को दिशा–निर्देश करता है। साहित्य में सामाजिक समस्याएं और उनका समाधान निहित होता है। अपने संवेदनशीलता के कारण समाज की परिस्थितियों से अधिक प्रभावित होता है।

शैलेश मटियानी का जीवन अनुभव विस्तृत रहा हैं। गांव से लेकर कस्बा, कस्बा से नगर और नगर से लेकर महानगर तथा पहाड. से लेकर मैदान तक आपका अनुभव क्षेत्र फैला हुआ है। पहाड., मैदान, प्लेटफार्म, अस्पताल, मुसाफिरखाना, रेल, होटल, मन्दिर आदि मटियानी के जीवन–यात्रा के पड़ाव रहे हैं। अपने विस्तृत जीवनानुभव के आधार पर सामाजिक दशाओं का जो चित्रण कथा–साहित्य मे किया है, उसे देखकर लगता है कि आज का समाज अनेक सामाजिक विसंगतियों से त्रस्त हैं। शैलेश मटियानी के अनुसार भारतीय जन–जीवन में सबसे बड़ी विसंगतियां निम्न एवं उच्च वर्ग मे है, जिनका सबसे बड़ा प्रभाव राष्ट्र पर पड़ता है।

सामाजिक जन–जीवन

समाजशास्त्र मे ं समाज ैवबपमजल) एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक अवधारणा है जहां जीवन है, वहां समाज भी है। साधारण अर्थ मे ं समाज शब्द का प्रयोग व्यक्तियो ं के समूह के लिए किया जाता है। किसी भी संगठित या असंगठित समूह को समाज कह दिया जाता है। महिला समाज, विद्यार्थी समाज, हिन्दू समाज, जैन समाज आदि। समाज शब्द का प्रयोग कही ं समूह के रूप मे ं तो कही ं समिति के रूप मे ं, किसी ने संस्था के रूप मे ं किया है।

विशिष्ट अर्थ में समाज शब्द का अर्थ व्यक्ति के बीच पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धो ं के आधार पर निर्मित व्यवस्था को कहा गया है। व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया करते है सामाजिक संबंध स्थापित करते है ं विभिन्न संबंधों के आधार पर एक–दूसरे के साथ व्यवहार करते है कुछ क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं करते है, यह सब कुछ हिन्दी नियमों के अनुसार होता है। इन सबसे मिलकर बनने वाली व्यवस्था ही समाज है। सामाजिक सम्बन्ध भौतिक संबंधों से भिन्न है। वह भिन्नता है– पारस्परिक जागरूकता। सामाजिक संबंधों का प्रमुख आधार पारस्परिक जागरूकता है जो भौतिक संबंधो ं मे ं नही पायी जाती है। जैसे आग और धुंए का तथा सूर्य और पृथ्वी का सम्बन्ध है परन्तु सामाजिक सम्बन्ध का अभाव हैं जहा सामाजिक प्राणी पारस्परिक रूप से जागरूक रहते हुए और एक–दूसरे की अपेक्षाओ को ध्यान मे रखते हुए व्यवहार करते हैं, वहीं समाज पाया जाता है।

व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्ध व अन्तःक्रिया

समाज व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों व अन्तः क्रिया से बनता है। जहां विवाह, परिवार, जाति, आदि सामाजिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। समाज के सभी सम्बन्ध इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से होते है। इस प्रकार सामाजिक जन–जीवन के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओ ं को रखा जा सकता है जिसके आधार पर शैलेश मटियानी के कथा–साहित्य का सामाजिक जन–जीवन चित्रिण हुआ है।

- पारिवारिक सम्बन्ध
- जाति व्यवस्था एवं छुआछूत
- विवाह
- पति–पत्नी सम्बन्ध
- स्त्री–पुरूष सम्बन्ध
- प्रेमी–प्रेमिका सम्बन्ध
- अनमेल विवाह
- बाल–विवाह
- विधवा–विवाह
- यौन सम्बन्धों
- विवाहेत्तर यौन सम्बन्ध
- बहु पत्नी प्रथा
- नारी जीवन
- पति के प्रति सहिष्णु नारी
- पति के प्रति अनन्य विश्वास
- पेम सम्बन्ध
- वेश्या जीवन
- बदलते सामाजिक मूल्य
- नैतिक मूल्यों का विघटन
- सामाजिक रूढ़ियाँ एवं अन्धविश्वास
- समाहार

उपसंहार

शैलेश मटियानी ने न सिर्फ हिन्दी के आंचलिक साहित्य को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचाया बल्कि हिन्दी कहानी को अनेक यादगार चरित्र भी दिये। आज समाज के कुछ विशेष वर्ग द्वारा धर्म की सही मान्यताओं को चकनाचूर करके रख दिया गया है। धार्मिक कारखानो ं के जरिए धर्मान्ध लोगों का उत्पादन आरम्भ हुआ। साथ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ही समकालीन परिवेश में नारी ने अपनी हदों को काफी विस्तार देने का प्रयास किया। घर और समाज की घेरेबंदी तोड़कर नारी औद्योगिक, व्यावसायिक, राजनीतिक संस्थानों, तथा अनेक क्षेत्रो ं मे कार्य करती दिखाई दी।

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय जीवन का यथार्थ इतना जटिल और बहुआयामी रहा है कि किसी एक कृति द्वारा उसकी सम्पूर्ण परिणिति की बात सोचा भी नहीं जा सकता है। राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक मूल्यो और मान्यताओ में उलटफेर, सबंधो और स्वार्थो ं की टकराहट और जीवन में बढ़ती हुई बौद्धिकता के फलस्वरूप जो नया परिवेश उपस्थित हुआ उसे कथाकार ने गम्भीरता से लिया। आजादी के बाद ही ग्रामीण अंचलों में भी बदलाव प्रारम्भ हुआ। औद्योगिक व नगरीकरण के उपलब्धियों ने गाँव को भी विकृत किया। जिसे सामंती शोषण के साथ जाति–प्रथा, नारी शोषण, विद्रोह की भावना, साम्प्रदायिकता आदि का सम्मिश्रण, ग्रामीण, नगरीय व महानगरीय जीवन में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है। शैलेश मटियानी अपने समकालीन परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति सशक्त रूप मे ं करते दिखते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अजय कुमार, इस्लाम अली, 'भारतीय राजनीतिक चिंतन, संकल्पनाएं एवं विचारक' च्मंतेवद दिल्ली, 2012

2. आचार्य डा0 दुर्गा दास बसु, 'भारत का स ंविधान–एक परिचय' वाधवा नागपुर, 2003

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', नगरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2057 वि0।

4. आद्या प्रसाद द्विवदी, 'लोक साहित्य के सिद्धान्त और भोजपुरी लेखक' ग्रीन वर्ड पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2006

5. इन्द्रनाथ मदान, 'हिन्दी कहानीः एक नयी दृष्टि' संभावना प्रकाशन, दिल्ली, 1978

6. उर्वीशचन्द्र मिश्र, 'शैलेश मटियानी व्यक्तित्व और कृतित्व' साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, 1999

7. ए0एल0 बाशम, 'अद्भुत भारत', शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा 8. एम0एल0 दोषी, पी0सी0 जैन, 'भारतीय सामाजिक व्यवस्था', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयप ुर 2007

9. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, 'अदम्य साहस' राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. एम0एन0 श्रीनिवास, 'भारत के गाँव' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

11. कल्पना राजाराम, 'भारतीय राजनीतिक व्यवस्था', स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2007

12. कैलाशचन्द्र पंत, 'सृजन यात्राः तीन श्री शैलेश मटियानी', मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, 2002

RRIJM 2015, All Rights Reserved